नहीं भोगना पड़ता। श्रीभगवान् इसमें वेदान्त-दर्शन का प्रमाण देते हैं। वे कहते हैं कि सब कर्मों के पाँच कारण हैं, जिन्हें कर्मसिद्धि के लिए जानना आवश्यक है। 'सांख्य' ज्ञानकाण्ड का वाचक है और वेदान्त सब महान् आचार्यों द्वारा स्वीकृत परम ज्ञान है। शंकर ने भी वेदान्तसूत्र की इस महत्ता को स्वीकार किया है। अतः इस प्रमाण की सहायता लेनी चाहिए।

परमात्मा का संकल्प सर्वोपरि है, जैसा गीता में कहा है, **सर्वस्य चाहं हृदि।** वे जीवों को विविध क्रियाओं में प्रेरित कर रहे हैं। उन अन्तर्यामी की आज्ञा के अनुसार किए गए कर्मों का इस लोक में अथवा परलोक में भी कोई फल नहीं होता।

इन्द्रियाँ कर्म करने की उपकरण हैं; इन्हीं के द्वारा आत्मा विविध प्रकार से क्रिया करता है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक कर्म में अलग-अलग चेष्टा रहती है। परन्तु अन्तिम रूप में तो जीव के सम्पूर्ण कर्म परमात्मा (दैव) की इच्छा पर ही अवलम्बित हैं, जो जीव-हृदय में सखा के रूप में बैठा है। अतः श्रीभगवान् परम कारण हैं। इस स्थिति में, जो पुरुष अन्तर्यामी परमात्मा के निर्देश के अनुसार कृष्णभावनाभावित कर्म करता है, वह स्वाभाविक रूप से किसी कर्मबन्धन में नहीं पड़ता। पूर्ण कृष्ण-भावनाभावित पुरुषों पर अपने कर्मों का अन्तिम दायित्व नहीं रहता; वे सब प्रकार से परमात्मारूप श्रीभगवान् की परम बलवती इच्छा पर निर्भर हैं।

शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः।।१५।।

शरीर वाक् मनोभिः=शरीर, वाणी और मन से; **यत्**=जो; **कर्म**=कर्म; **प्रारभते**=आरम्भ करता है; **नरः**=मनुष्य; **न्याय्यम्**=धर्ममय; **वा**=अथवा; **विपरीतम्**=अधर्ममय; **वा**=अथवा; **पञ्च**=पाँच; **एते**=ये; **तस्य**=उसके; **हेतवः**=कारण हैं।

अनुवाद

मनुष्य मन, वाणी और शरीर से जो कुछ भी धर्ममय (शास्त्र के अनुकूल) अथवा अधर्ममय (शास्त्र के विपरीत) कर्म करता है, उसके ये पाँचों कारण हैं।।१५।।

तात्पर्य

इस श्लोक में **न्याय्यम्** (धर्ममय) और **विपरीतम्** (अधर्ममय), ये दोनों शब्द महत्त्वपूर्ण हैं। धर्ममय कर्म वह है, जो शास्त्रविधि के अनुसार किया जाय, जबकि शास्त्रविरुद्ध कर्म अधर्ममय कहलाता है। परन्तु चाहे जो भी कर्म किया जाय, उसकी पूर्णता के लिए ये पाँचों हेतु अनिवार्य हैं।

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः।।१६।।

तत्र=उस सम्बन्ध में; **एवम्**=ऐसा; **सति**=होने पर भी; **कर्तारम्**=कर्ता; **आत्मानम्**=आत्मा को; **केवलम्**=केवलमात्र; **तु**=परन्तु; **यः**=जो; **पश्यति**=देखता